# Shri Sita Ashtakshara Stotram

# श्रीसीताष्टाक्षरस्तोत्रम्

## Document Information

Text title : Sita Ashtakshara Stotram

File name : sItAShTAkSharastotram.itx

Category : devii, sItA

Location : doc_devii

Transliterated by : Saritha Sangameswaran

Proofread by : Saritha Sangameswaran, D.K.M Kartha

Latest update : July 24, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 24, 2023

*sanskritdocuments.org*

Shri Sita Ashtakshara Stotram

# श्रीसीताष्टाक्षरस्तोत्रम्

(वसिष्ठसंहितान्तर्गतम्)

श्रीसीताराम चरणौ शरणं प्रपद्ये ।

अङ्गद उवाच -

लङ्काया हि प्रचण्डोग्रेर्यत्पाठाद् रक्षितोऽसि तत् ।
श्रीसीताष्टाक्षरस्तोत्रं वक्तुमर्हसि मारुते ॥ १॥

उसके लिए जिसने आपको लंका की भीषण आग के पाठ से बचाया है। हे वायुपुत्र, तुम श्रीसीता के अष्टांगी स्तोत्र का पाठ करो ।

For that which has saved you from the lesson of the terrible fire of Lanka. O son of wind, you should recite the eight-syllable stotra of Sri Sita.

हनुमान उवाच -

रामभक्त महाभाग सन्मते वालिनन्दन ।
श्रीसीताष्टाक्षरस्तोत्रं सर्वभीतिहरं शृणु ॥ २॥

हे वालिनंदन महाभाग रामभक्त अंगद ! सभी भयों को दूर करने वाले श्रीसीता अष्टाक्षर स्तोत्र का पाठ करें ।

O Balinandana mahabhag rambhakt listen to the Sri Sita Ashtakshara Stotram which removes all fears.

श्रीमद् रामप्रिया पुण्या श्रीमद् रामपरायणा ।
श्रीमद् रामादभिन्ना च श्रीसीता शरणं मम ॥ ३॥

वह श्रीमद राम को प्रिय है और पवित्र और श्रीमद राम के प्रति समर्पित है। श्रीसीता, जो धन्य राम से अभिन्न हैं, मेरी शरण हैं ।

She is dear to Srimad Rama and is pious and devoted to Srimad Rama. Sri Sita, who is not different from the blessed Rama, is my refuge.

शरणाश्रित रक्षित्री भास्करार्देविभासिता ।
आकार त्रय शिक्षित्री श्रीसीता शरणं मम ॥ ४॥

आपकी शरण में आने वाला रक्षक सूर्य के समान चमकता है तीनों रूपों की शिक्षिका श्रीसीता मेरी शरणस्थली हैं ।

The protector who takes refuge in you shines like the sun Sri Sita, the teacher of the three shapes, is my refuge.

शक्तिदा शक्तिहीनानां भक्तिदा भक्तिकामिनाम् ।
मुक्तिदा मुक्तिकामानां श्रीसीता शरणं मम ॥ ५॥

शक्तिहीन को शक्ति दाता, भक्तों की भक्ति । मोक्ष दा मोक्ष की इच्छा रखने वालों के लिए मां सीता ही मेरी शरणस्थली हैं ।

Giver of strength to the powerless, devotion to the devotees. Sri Sita, the giver of liberation, is my refuge for those who desire liberation.

ब्रह्माण्युमारमाराध्या ब्रह्मेशादि सुरस्तुता ।
वेदवेद्या गुणाम्भोधिः श्रीसीता शरणं मम ॥ ६॥

ब्राह्मणस्वरूपिणी जो ब्रह्मा ईश आदि सुरों के द्वारा पुजीत हैं । सीता, वेदों की वेदी, गुणों का सागर, मेरी शरण है ।

Brahman swarupini who is adored and worshipped by Brahma, shiv and other devas surastuta. Sri Sita, the altar of the Vedas, the ocean of virtues, is my refuge.

शुन्या हि निग्रहेण्यानुग्रहाब्धिः सुवत्सलाः ।
जननी सर्वलोकानां श्रीसीता शरणं मम ॥ ७॥

जो कभी किसी को दंड नहीं देती और वात्सल्य का ही प्रमुख स्वरूप है और जगत की आदि जननी है, वो मां सीता ही मेरी शरण है ।

Who never punishes anyone and who is very form of compassion and who is mother of jagat, that maa Sita is my refuge.

चिदचिदाभ्यां विशिष्टा च सच्चिदानन्दरूपिणी ।
कार्यकारणरूपा च श्रीसीता शरणं मम ॥ ८॥

जो जड़ चेतन से विशिष्ट है तथा जो स्वयं सच्चिदानंद स्वरूपा है, तथा जो कार्य कारण रूपा है, उन मां सीता ही मेरी शरण हैं ।

Who is distinctive from root conciousness, who is sacchidanand form and who is cause and effect firm that maa Sita is my refuge.

विशोका दिव्यलोका च बिम्बी दिव्या च भूषणा ।

दिव्याम्बरा च दिव्यांगी श्रीसीता शरणं मम ॥ ९॥

जो शोकातीत है, जो दिव्य लोक वाहिनी है, व्यापक है, दिव्य वस्त्र अलंकारों से अलंकृत है, उन मां सीता ही मेरी शरण हैं ।

Who is beyond sorrow,. Who resides in divine lok ie saket lok, who is omnipresent, who wears divine ornaments such maa Sita is my refuge.

भर्त्री च जगतः कर्त्री हर्त्री जनकनन्दिनी ।
जगद्धर्त्री जगद्योनीः श्रीसीता शरणं मम ॥

जो जगत की भरण, पोषण तथा संहार करती है, जो जगत् को धारण करती है तथा जगत को उत्पन्न करती है, उन मां सीता ही मेरी शरण हैं ।

Who cares, nourishes, destroys jagat, who carries jagat, who creates jagat, that maa Sita is my refuge.

सर्वकर्मसमाराध्या सर्वकर्मफलप्रदा ।
सर्वेश्वरी च सर्वज्ञा श्रीसीता शरणं मम ॥ १०॥

सभी सत्कर्मों को करते समय जिनकी आराधना हो जाती है, सभी कर्मों के फल प्रदान करने वाली है, उन सर्वेश्वरी तथा सर्वज्ञा श्रीसीता ही मेरी शरण हैं ।

Who is getting worshipped by all good works, who gives results of all work, to that sarveshwari maa Sita is my refuge.

नित्यमुक्तस्तुता स्तुत्या सेविता विमलादिभिः ।
अमोघपूजन स्तोत्रा श्रीसीता शरणं मम ॥

जो नित्य मुक्त जन जिनकी पुजा करते हैं, जो स्तुति करने योग्य है, जो विमला उत्कर्षिणी आदि अष्ट महा शक्तियों द्वारा सेवित है, जिनका पुजा अमोघ फल प्रदान करने वाला है उन मां सीता ही मेरी शरण हैं ।

Who is regularly worshipped by avimukt, who should be sung in stutis, who is being served by vimla, utkarshini and other 8 maha Shakti, whose worship gives permanent result, that maa Sita is my refuge.

कल्पवल्ली हि दीनानां सर्वदारिद्र्यनाशिनी ।
भूमिजा शान्तिदा शान्ता श्रीसीता शरणं मम ॥ ११॥

जो दीनो का दरिद्रो का विनाश करने वाली है, जो भुमि के बेटी शान्त स्वरूप तथा शान्ति प्रदायिनी उन मां सीता ही मेरी शरण हैं ।

Who destroys poverty of poor, who is daughter of earth, who is silent form and who gives peace that maa Sita is my refuge.

आपदाहारिणी चाथकारिणी सर्वसम्पदाम् ।
भवाब्धितारिणी सेव्या श्रीसीता शरणं मम ॥ १२॥

जो आपदा तथा विपदा को हरण करने वाली है, जो सर्व सौभाज्ञ प्रदान करने, जो भव सागर से तारने वाली है उन मां सीता ही मेरी शरण हैं ।

Who takes away all troubles and suffering, who gives wealth and who gives moksh from life and death, that maa Sita is my refuge.

वसिष्ठ उवाच -
पाठाद् हनुमता प्रोक्तं नित्य मुक्तन सदा (?) ।
श्रीसीताष्टाक्षरस्तोत्रं भुक्तिमुक्ति प्रदान् सदा ॥ १३॥

जो नित्य हनुमान जी द्वारा बोला गया श्रीसीताष्टक्षर पाठ करेग, उसे भक्ति और मुक्ति दोनो सुलभ प्राप्त हो जाएंगे ।

Whoever regularly chants this sitashtakshar stotram, gets both bhakti and mukti very easily.

ॐ ह्रीं श्रीं सीतायै नमः ।

The text needs review as there are possible errors in the scan. The source Vasishtha Samhita is not available to check.

Encoded by Saritha Sangameswaran
Proofread by Saritha Sangameswaran, D.K.M Kartha

*Shri Sita Ashtakshara Stotram*
pdf was typeset on July 24, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*